ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 **PP. NO.- 167-170**
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-8, No.-II, Issues-IX YEAR- Dec-2017

फिरोजाबाद जनपद के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की धर्म में अभिवृत्ति

डॉ0 लोकेश यादव
असिस्टेण्ट प्रोफेसर– एम0एड0 विभाग, ए0के0कालेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, (उ0प्र0) भारत

अत्यधिक विश्वसनीय एवं वैध परीक्षणों के द्वारा एकत्रित आंकड़ों को उद्देश्य की प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत, गणना, विश्लेषण तथा व्याख्या की जाती है। यदि संकलित प्रदत्तों का विवेचन बुद्धिमत्तापूर्ण व तार्किक ढंग से न किया जाए तो वे असार्थक व अपूर्ण ही रह जाते हैं। प्रदत्तों का विश्लेषण एवं वर्गीकरण से अभिप्राय विभिन्न श्रेणियों तथा श्रेणियों से प्रदत्तों का विभाजन करना, गणना करना तात्पर्य प्रदत्तों का विभिन्न सांख्यिकी गणना युक्त प्रदत्तों में निर्वन्त अर्थ का स्पष्टीकरण करना है। जिससे कि शोध प्रश्नों के विषय में कुछ वास्तविक निष्कर्ष निकाल सकें।

विवेचनों का अभिप्रायः प्राप्त परिणामों की प्रवृत्ति की कारणात्मक व्याख्या करना तथा उपलब्ध अध्ययनों के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान परिणाम की सम्यक् विवेचना है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

सर्वप्रथम मैंने ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के अन्तर ज्ञात करने के लिए विद्यार्थियों को अभिवृत्ति मापनी दी। मैंने 50 ग्रामीण छात्र तथा 50 शहरी छात्र लिये। अभिवृत्ति मापनी भरवाने के बाद मैंने पॉच विभिन्न अभिवृत्तियों के आयामों जैसे – शिक्षक तथा अभिभावक, अनुशासन, जीवन तथा मानवता, देश धर्म के प्रति अभिवृत्तियों के प्राप्तांकों को अलग अलग मध्यमान और प्रमाणिक विचलन निकाले तथा दोनों समूहों के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलनों के आधार पर क्रान्तिक अनुपात की गणना की है।

प्रस्तुत प्रदत्तों का विश्लेषण उद्देश्यानुसार किया गया है।

उद्देश्य –1 : ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

तालिका संख्या – 1

ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

क्र0सं0	अभिवृत्ति के आयाम	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
1	शिक्षक एवं अभिभावक	8.98	1.568
2	अनुशासन	6.58	1.724
3	जीवन एवं मानवता	12.96	2.599
4	देश	7.54	1.675
5	धर्म	15.18	1.996

उपरोक्त तालिका के सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विद्याथियों की धर्म के प्रति अभिवृत्ति अन्य सभी अभिवृत्तियों से अधिक है। मध्यमान उच्च होने के कारण निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते हैं कि ग्रामीण विद्यार्थी अधिक धार्मिक होते हैं। वे ईश्वर में विष्वास रखते हैं और धर्म के प्रति आस्था रखते हैं, इसलिए उनकी धर्म के प्रति अभिवृत्ति अन्य अभिवृत्तियों की अपेक्षा उच्च स्तर की है। जीवन व मानवता के प्रति उनकी अभिवृत्ति के मान दूसरे स्थान पर है। इसका तात्पर्य है कि वे अधिक यथार्थवादी हैं तथा मानवता के गुणों से युक्त हैं। तत्पश्चात् ग्रामीण विद्यार्थियों ने शिक्षक एवं अभिभावक, देश तथा अनुशासन के प्रति कमवद्ध अभिवृत्ति प्रदर्शित की है।

उद्देष्य –2 : शहरी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

तालिका संख्या – 2

शहरी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

क्र0सं0	अभिवृत्ति के आयाम	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
1	शिक्षक एवं अभिभावक	8.28	1.732
2	अनुशासन	5.98	1.702
3	जीवन एवं मानवता	13.2	2.424
4	देश	7.76	1.8062
5	धर्म	14.96	3.1045

अनुरूपी लेखक

उपरोक्त तालिका के सांख्यिकी विष्लेषण से स्पष्ट होता है कि शहरी विद्यार्थियों की धर्म के प्रति अभिवृत्ति अन्य सभी अभिवृत्तियों से अधिक है। मध्यमान उच्च होने के कारण निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते है कि शहरी विद्यार्थी धार्मिक होते हैं। वे ईश्वर में विश्वास रखते हैं और धर्म के प्रति आस्था रखते हैं। शहरी विद्यार्थियों की जीवन शैली में अत्यधिक फैलाव होता है। उनका जीवन व्यस्त रहता है और वे अपने जीवन की गतिविधियों में व्यस्त रहने के बावजूद भी धर्म के प्रति आस्था एव विश्वास रखते हैं। इसलिए उनकी धर्म के प्रति अभिवृत्ति अन्य अभिवृत्तियों की अपेक्षा उच्च स्तर की होती है। दूसरे स्थान पर जीवन तथा मानवता के प्रति अभिवृत्ति अपना स्थान रखती है। शहरी विद्यार्थियों की जीवन शैली भिन्न व उच्च विचार की होती है तथा उनमें मानवता का गुण सम्मलित होता है। तत्पश्चात् शहरी विद्यार्थियों ने षिक्षक एवं अभिभावक, देश तथा अनुशासन के प्रति क्रमवद्ध अभिवृत्ति प्रदर्षित की है।

उद्देश्य –3 : ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका संख्या – 3

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

क्र0 सं0	अभिवृत्ति के आयाम	ग्रामीण		शहरी	
		मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
1	शिक्षक एवं अभिभावक	8.98	1.568	8.28	1.732
2	अनुशासन	6.58	1.7215	5.98	1.702
3	जीवन एवं मानवता	12.96	2.599	13.2	2.424
4	देश	7.54	1.675	7.76	1.8062
5	धर्म	15.18	1.996	14.96	3.1045
6	सम्पूर्ण अभिवृत्ति	51.86	5.761	49.58	8.6650

उपरोक्त तालिका के सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण तथा शहरी विद्याथियों के अभिवृत्ति के आयामों के माध्यामानों में कुछ अन्तर है, परन्तु क्रमबद्धता एक समान है। पहले स्थान पर ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की धर्म के प्रति अभिवृत्ति पायी गयी परन्तु इसके मध्यमानों में अन्तर पाया गया, शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थियों की धर्म के प्रति अभिवृत्ति उच्च स्तर की पायी गयी। दूसरे स्थान पर जीवन तथा मानवता के प्रति अभिवृत्ति पायी गयी, परन्तु इसके मध्यमानों में निम्न स्तर का अन्तर पाया गया। तीसरे स्थान पर शिक्षक एवं अभिभावक के प्रति अभिवृत्ति पायी गयी, इसके मध्यमानों में प्राप्त अन्तर के आधार पर कह सकते है कि ग्रामीण विद्यार्थियों में यह अभिवृत्ति शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तर की है। चौथे व पॉचवे स्थान पर देश तथा अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति पायी गयी परन्तु इसके मध्यमानों में अन्तर पाया गया जो बहुत अधिक नहीं है। अतः कह सकते है कि ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एक समान पायी गयी।

उद्देष्य –4 : ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों का षिक्षक एवं अभिभावक के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

तालिका संख्या – 4

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का षिक्षक एवं अभिभावक के प्रति अभिवृत्ति

समूह	N	M	SD	$SE_{D(ms)}$	df	t
ग्रामीण	50	8.98	1.568	0.33	98	2.12**
शहरी	50	8.28	1.732			

नोट : '' त्र 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

उपरोक्त तालिका के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की षिक्षक एवं अभिभावक के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सार्थकता का मान 2.12 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक है, जिसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक व वास्तविक अन्तर है।

ग्रामीण विद्यार्थियों की शिक्षक एवं अभिभावक के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्ताकों का मध्यमान 8.98 तथा मानक विचलन 1.568 है जबकि शहरी विद्यार्थियों की शिक्षक एवं अभिभावक के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 8.28 तथा मानक विचलन 1.732 है। ग्रामीण विद्यार्थियों के द्वारा प्राप्त मध्यमान उच्च होने के कारण निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि शिक्षक एवं अभिभावक के प्रति अभिवृत्ति में शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थी उच्च अभिवृत्ति रखते हैं। इसका कारण सम्भवतः यह है कि ग्रामीण विद्यार्थियों में शिक्षक तथा अभिभावकों के प्रति आदरभाव अधिक होता

है क्योंकि उनकी जीवन शैली का दायरा सीमित होता है। वह जन्म से ही अपने अभिभावकों तथा उसके बाद शिक्षकों के बीच रहते हैं और उनके संस्कारों व व्यवहारों को अपने व्यवहार में सम्मिलित करते हैं, जबकि शहरी विद्यार्थियों में यह गुण निम्न स्तर का पाया जाता है।

उद्देश्य –5 : ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की अनुषासन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

तालिका संख्या – 5

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति

समूह	N	M	SD	$SE_{D(ms)}$	df	t
ग्रामीण	50	6.58	1.7215			
शहरी	50	5.98	1.702	0.34	98	1.75

उपरोक्त तालिका के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति की सार्थकता जानने हेतु टी0 परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका मान 1.75 है जो कि सार्थक नहीं पाया गया। जिसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति एक समान है।

उद्देष्य –6 : ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की जीवन तथा मानवता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

तालिका संख्या – 4.6

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की जीवन तथा मानवता के प्रति अभिवृत्ति

समूह	N	M	SD	$SE_{D(ms)}$	df	t
ग्रामीण	50	12.96	2.599	0.50	98	0.48
शहरी	50	13.2	2.424			

उपरोक्त तालिका के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की जीवन तथा मानवता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की जीवन तथा मानवता के प्रति अभिवृत्ति की सार्थकता जानने हेतु टी0 परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसका मान 0.48 है जो कि सार्थक नहीं पाया गया, जिसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की जीवन तथा मानवता के प्रति अभिवृत्ति एक समान है।

उद्देश्य –7 : ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की देश के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

तालिका संख्या – 7

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की देष के प्रति अभिवृत्ति

समूह	N	M	SD	$SE_{D(ms)}$	df	t
ग्रामीण	50	7.54	1.675	0.35	98	0.63
शहरी	50	7.76	1.8062			

उपरोक्त तालिका के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की देश के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की देश के प्रति अभिवृत्ति की सार्थकता जानने हेतु टी0 परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसका मान 0.63 है, जो कि सार्थक अन्तर नहीं है। जिसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की देश के प्रति अभिवृत्ति एक समान है।

उद्देश्य –8 : ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की धर्म के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

तालिका संख्या – 8

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की धर्म के प्रति अभिवृत्ति

समूह	N	M	SD	$SE_{D(ms)}$	df	t
ग्रामीण	50	15.18	1.996	0.52	98	0.41
शहरी	50	14.96	3.1045			

उपरोक्त तालिका के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की धर्म के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की धर्म के प्रति अभिवृत्ति की सार्थकता जानने हेतु टी0 परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसका मान 0.41 है, जो कि सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जिसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की धर्म के प्रति अभिवृत्ति एक समान है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता अल्का (2012) : ''उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. गुप्ता, एस0पी0 (2010) : ''मनोविज्ञान में सांख्यिकी विधियाँ'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता अल्का (2012) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. गुप्ता, जी0 (1976) : ''फैमिली एण्ड सोशल चैन्ज इन मॉडर्न इण्डिया'' विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
5. जरसील्ड, टी0 (1963) : ''चाइल्ड साइक्लॉजी एण्ड एडोलसेंट'', द्वितीय संस्करण– न्यूयार्क।
6. भार्गव, महेश (2003) : ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'' भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
7. भटनागर, ए0वी0, भटनागर, मीनाक्षी : ''शैक्षिक मनोविज्ञान'' इन्टरनेशनल एवं भटनागर, अनुराग (2002) पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
8. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी0एन0(2012) : ''मनोवैज्ञानिक और शिक्षा में सांख्यिकी'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
9. सिंह लाखन (1975) : ''कम्परेटिव स्टडी ऑफ एटीट्यूड एण्ड वेल्यू ऑफ सरटनकास्ट'', एझउ रिलीजियस ग्रुप, पुणे।

*****